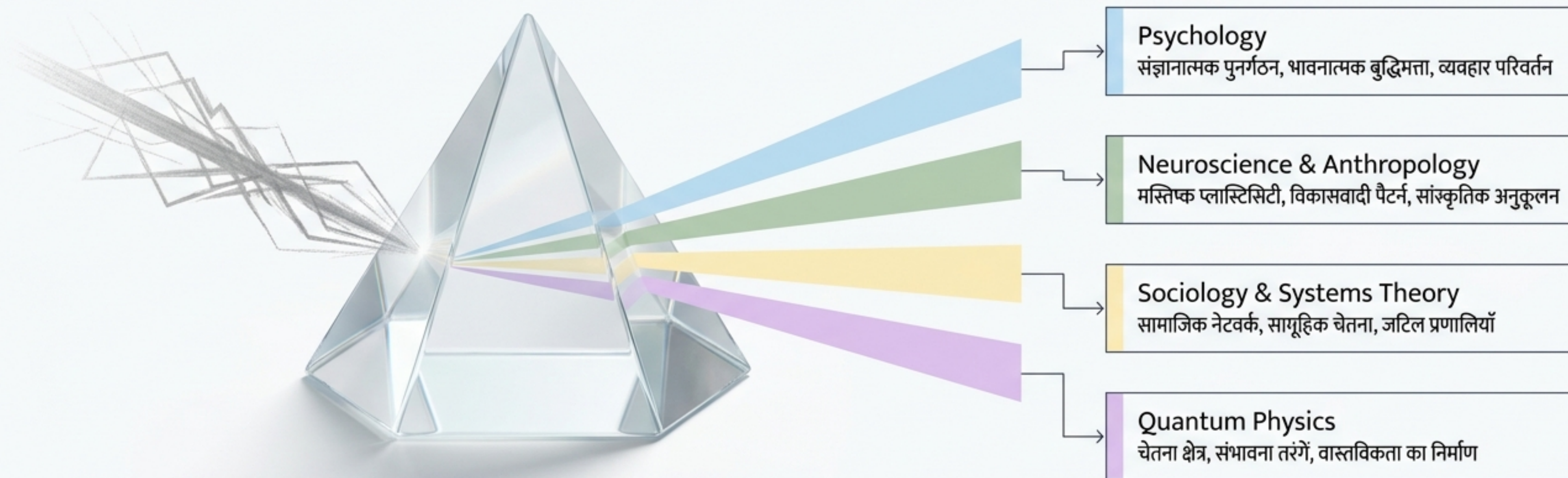
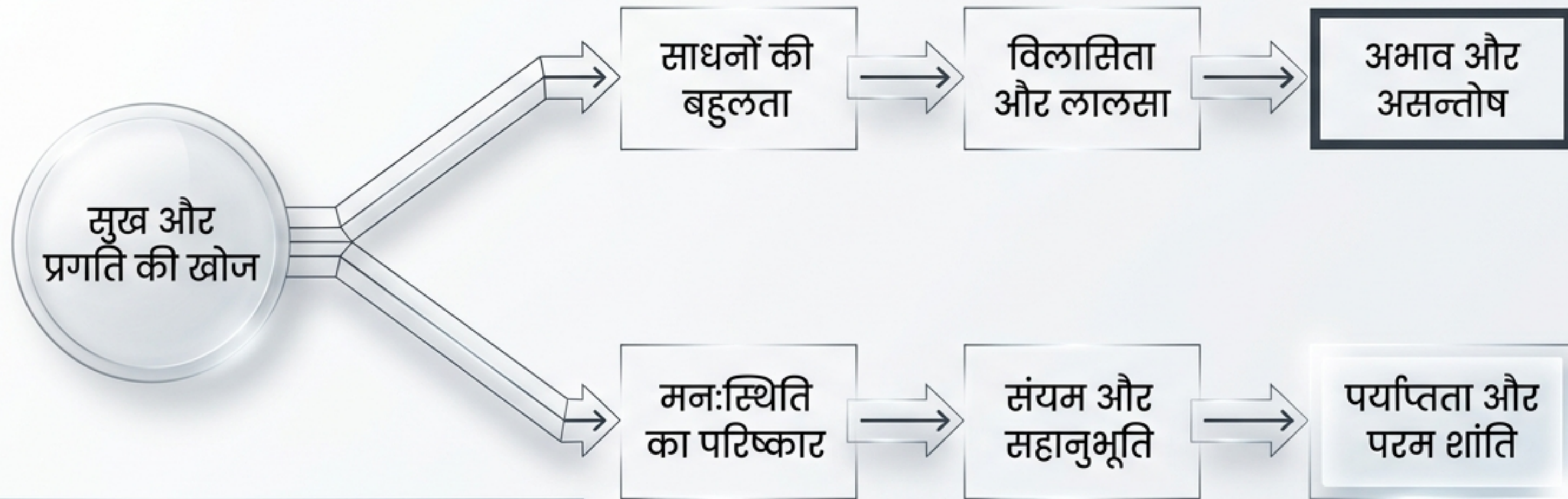


मन: स्थिति बदले, तो परिस्थिति बदले

मानव जीवन, समाज और प्रकृति के अंतर्संबंधों का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक विश्लेषण (अध्याय ५-८)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



वैज्ञानिक तथ्य: मनोविज्ञान

‘हेडोनिक ट्रेडमिल’ (Hedonic Treadmill) सिद्धांत यह सिद्ध करता है कि बाहरी साधनों के संचय से मस्तिष्क में केवल ‘डोपामाइन’ का क्षणिक साव होता है, जबकि उद्देश्यपूर्ण दृष्टिकोण से ‘सेरोटोनिन’ उत्पन्न होता है, जो स्थायी शांति देता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के ज्ञान रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चीर आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कतिधनी साहित्य के मेरे ज्ञान शरीर को मेरे कतिधनी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” – पूज्य गुरुदेव युगश्रुषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पाण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “ ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

साधनों से भी अधिक सद्गुणों की आवश्यकता

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “ ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “ “ ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “ “ ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “ “ ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए ॥ कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “ “ ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



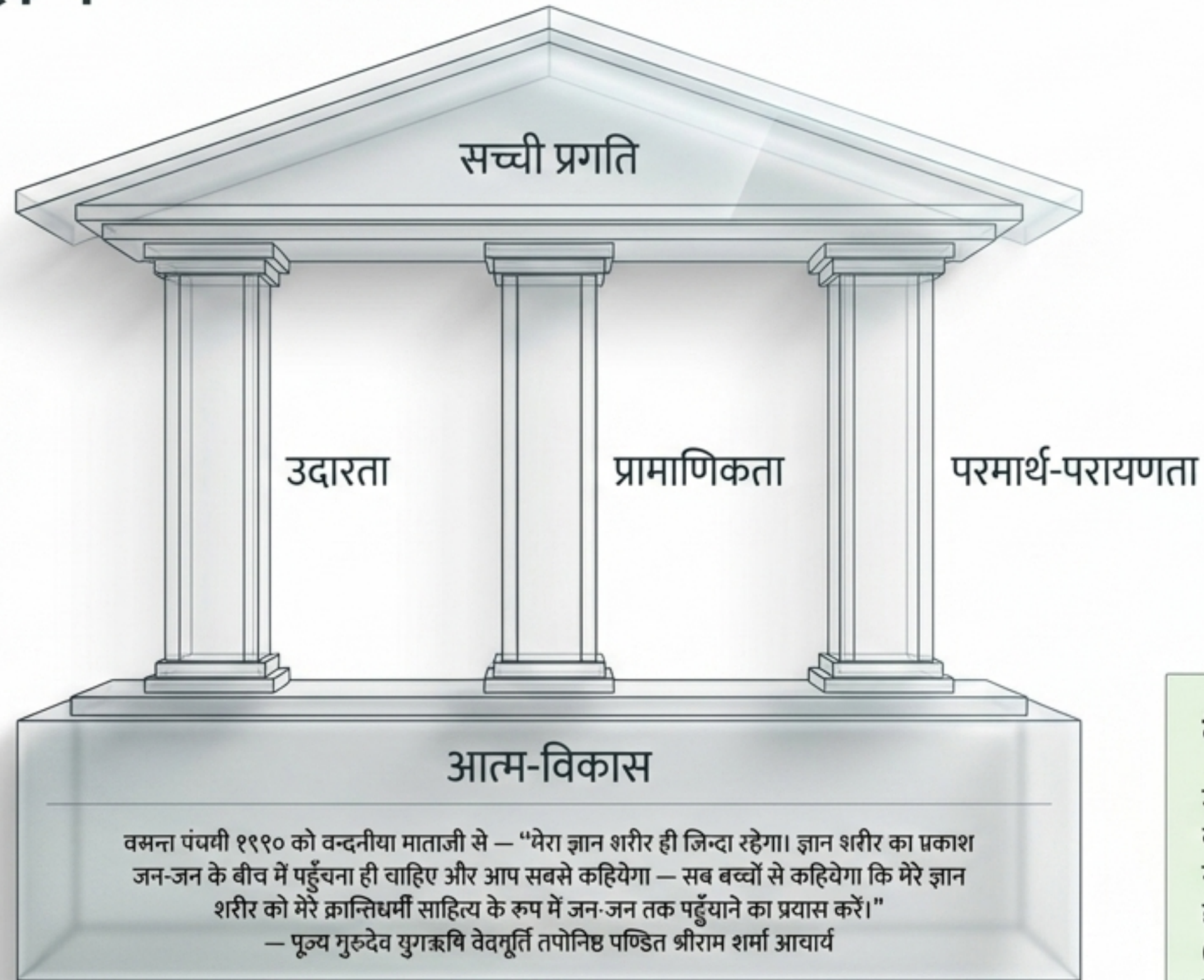
१. बिना परिश्रम की संपत्ति

२. विलासिता और
अहंकार का उद्भव

३. पतन और अनर्थ

पारा पचता नहीं। वह शरीर के विभिन्न अंगों में से फूट-फूट कर निकलता है। उसी प्रकार प्रकाश निष्ठुर मानसिकता से कमाया धन हर हालत में अनर्थ ही उत्पन्न करेगा।

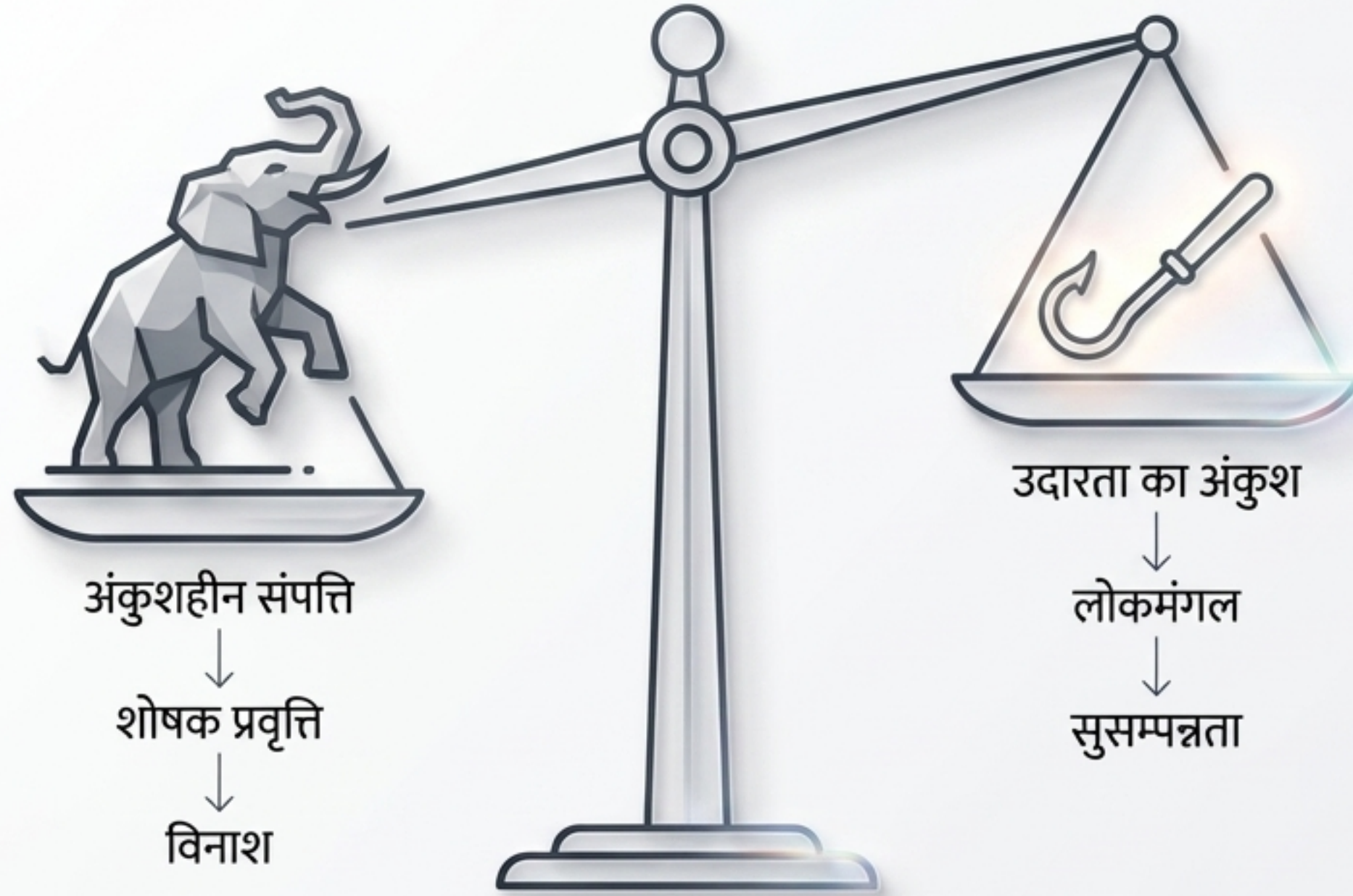
प्रगति के तीन स्तंभ



वैज्ञानिक तथ्य: न्यूरोसाइंस

जब मनुष्य उदारता और परमार्थ के कार्य करता है, तो मस्तिष्क का 'मेसोलिम्बिक मार्ग' (Mesolimbic pathway) सक्रिय हो जाता है, जिससे तनाव का हार्मोन (Cortisol) घटता है और शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य में असाधारण सुधार होता है।

उदारता अपनाई जाये: संपत्ति का सही उपयोग



सम्पत्ति उन्मत्त हाथी की तरह है,
जिस पर उदारता का अंकुश आवश्यक है। सम्पत्ति दुधारी
तलवार है - सदुपयोग न होने पर यह रक्षक नहीं, भक्षक बन जाती है।

गुरुदेव का अमर संदेश

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन
के बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा — सब
बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान
शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य
के रूप में जन-जन तक पहुँचाने
का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

‘मत्स्य न्याय’ मानव समाज के लिए विनाशकारी है



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जित्ना रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जो जितना रहेगा।”

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जित्ना रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जो जितना रहेगा।”

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचाने आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्राहियेगा मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रांतिधर्मी साहित्य के रूप पहुँचाने का प्रयास करें।” जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति षष्ठ पण्डित शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



वितरण और सहभागिता का नियम

गोग्रास, पञ्च यज्ञ, जकात, और कड़ा-प्रसाद — ये सभी इसी सहभागिता और वितरण के नियम के प्रतीक हैं।

देवासुर संग्राम: दो विचारधाराओं का टकराव

	दैत्य पक्ष (Demonic Mindset)	देव पक्ष (Divine Mindset)
दृष्टिकोण	पदार्थ प्रधान (Material is supreme)	भावना प्रधान (Emotion/Spirit is supreme)
व्यवहार	छीना-झपटी (Snatching & Grabbing)	सहकारिता (Cooperation)
परिणाम	असंतोष और चिरकालिक विग्रह	परम शांति और तालमेल

वैज्ञानिक तथ्य: क्वांटम भौतिकी

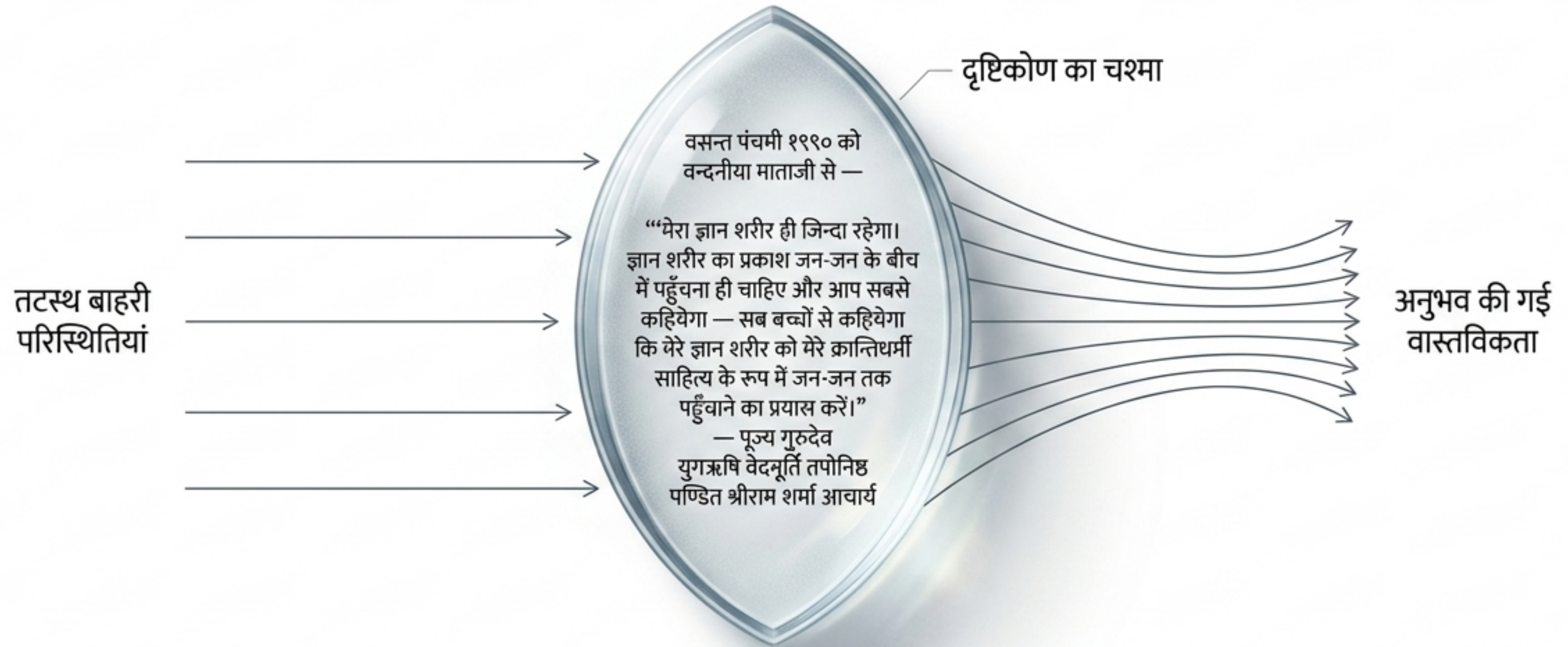
विज्ञान अब यह सिद्ध कर रहा है कि 'चेतना' (भावना) भौतिक ब्रह्मांड का एक मूलभूत तत्त्व है। पदार्थ (Matter) पर्यवेक्षक की मनःस्थिति से सीधे तौर पर प्रभावित होता है।

आवश्यकता बनाम हविश

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदनूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



रंगीन चश्मा: मन: स्थिति ही परिस्थिति की जन्मदात्री

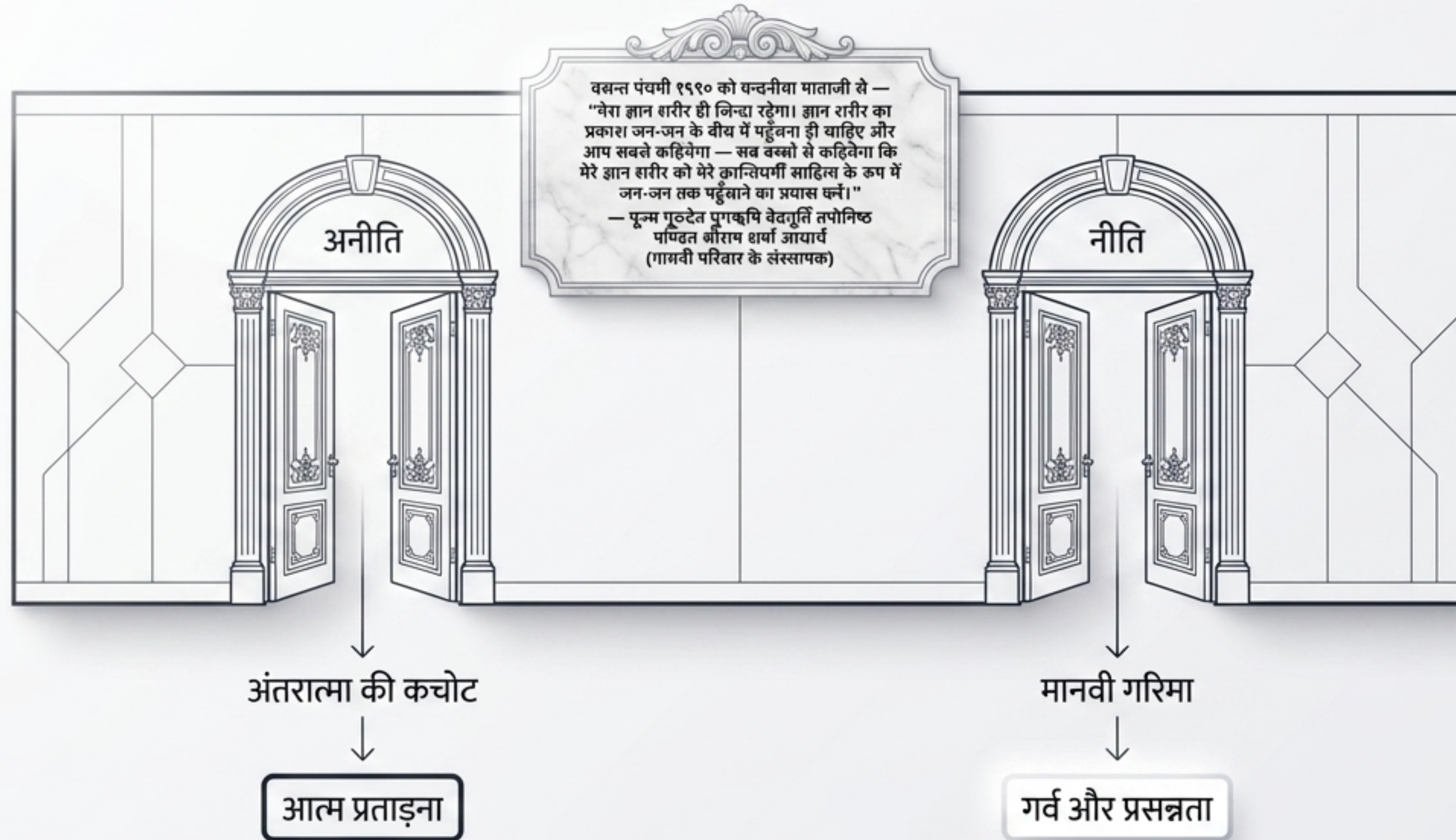


रंगीन चश्मा पहन लेने पर सारा संसार रंगीला दीख पड़ता है। चश्मा उतारकर यथार्थ को स्वीकार करने से आधी समस्याएं स्वयं समाप्त हो जाती हैं।

वैज्ञानिक तथ्य: संज्ञानात्मक मनोविज्ञान

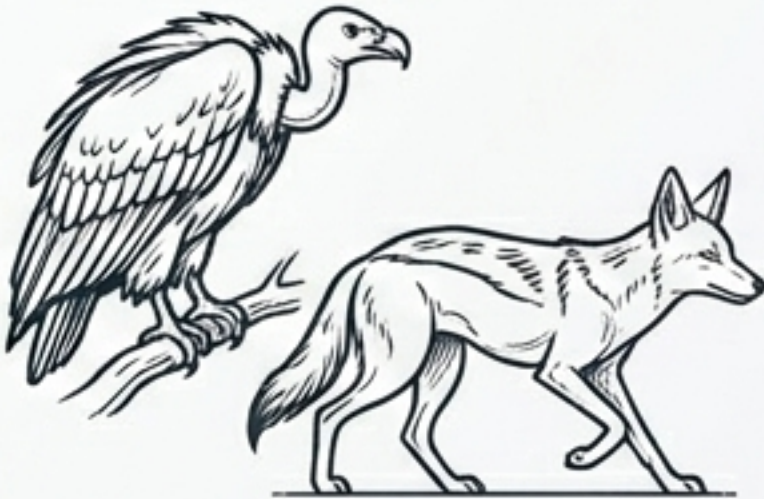
'संज्ञानात्मक पुनर्रचना' (Cognitive Reframing) प्रमाणित करती है कि जब हम अपने आंतरिक दृष्टिकोण को बदलते हैं, तो हमारा न्यूरोकेमिकल रिस्पांस तुरंत बदल जाता है, जिससे हमारी भौतिक वास्तविकता अक्षरशः बदल जाती है।

परिवर्तन का आधार: स्वर्ग और नरक की दीवारें



स्वर्ग और नरक की दीवारें आपस में जुड़ी हुई हैं। प्रवेश द्वार आपका अपना चुनाव है।

मानव गरिमा बनाम पशु प्रवृत्तियां

पशु प्रवृत्तियां	मानव गरिमा
 ✓ शुद्ध अस्तित्व की लड़ाई ✓ कोई नीति-मर्यादा नहीं	 ✓ असीम बुद्धिमत्ता ✓ नैतिक वर्जनाओं का अनुशासन

तलवार होने का अर्थ कत्लेआम करना नहीं है। पशुओं जैसी स्वार्थपरता के लिए मनुष्य अपनी अतिरिक्त बुद्धिमत्ता का उपयोग करे, तो यह ब्रह्मांड का सबसे बड़ा अनर्थ है।

वैज्ञानिक तथ्य: नृविज्ञान

मानव मस्तिष्क का 'प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स' हमें नैतिक तर्क की क्षमता देता है। इसे दरकिनार कर केवल 'एमिग्डाला' (भय/लालच) के आधार पर जीना हमारे जैविक विकास के विरुद्ध है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे कान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” – पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रकृति के साथ हमारा व्यवहार: आत्मघाती या सहजीवी?

अनियंत्रित हविश



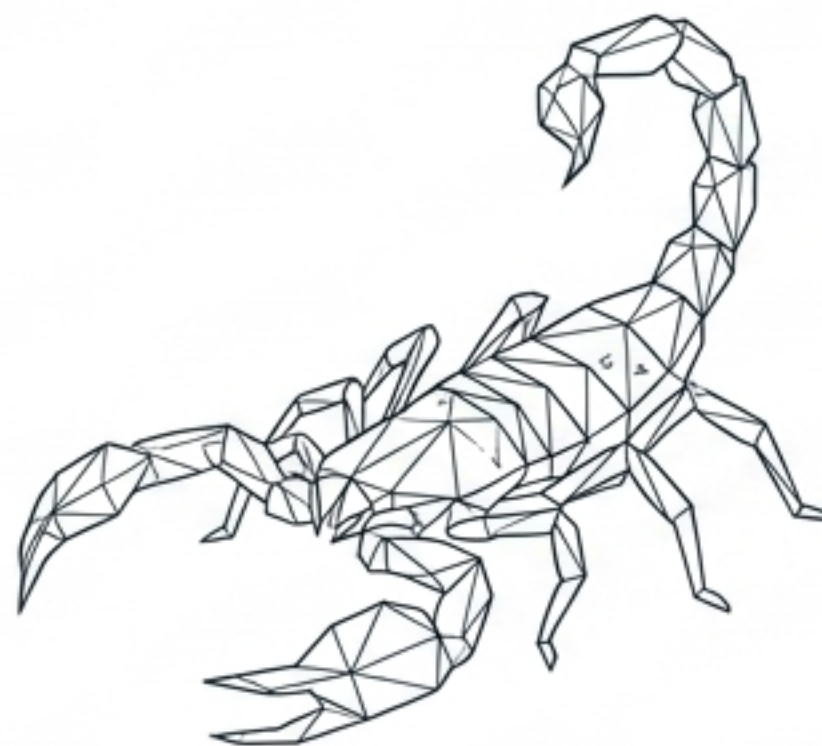
असीम उत्खनन और प्रदूषण



प्रकृति का रक्षा कवच फटना

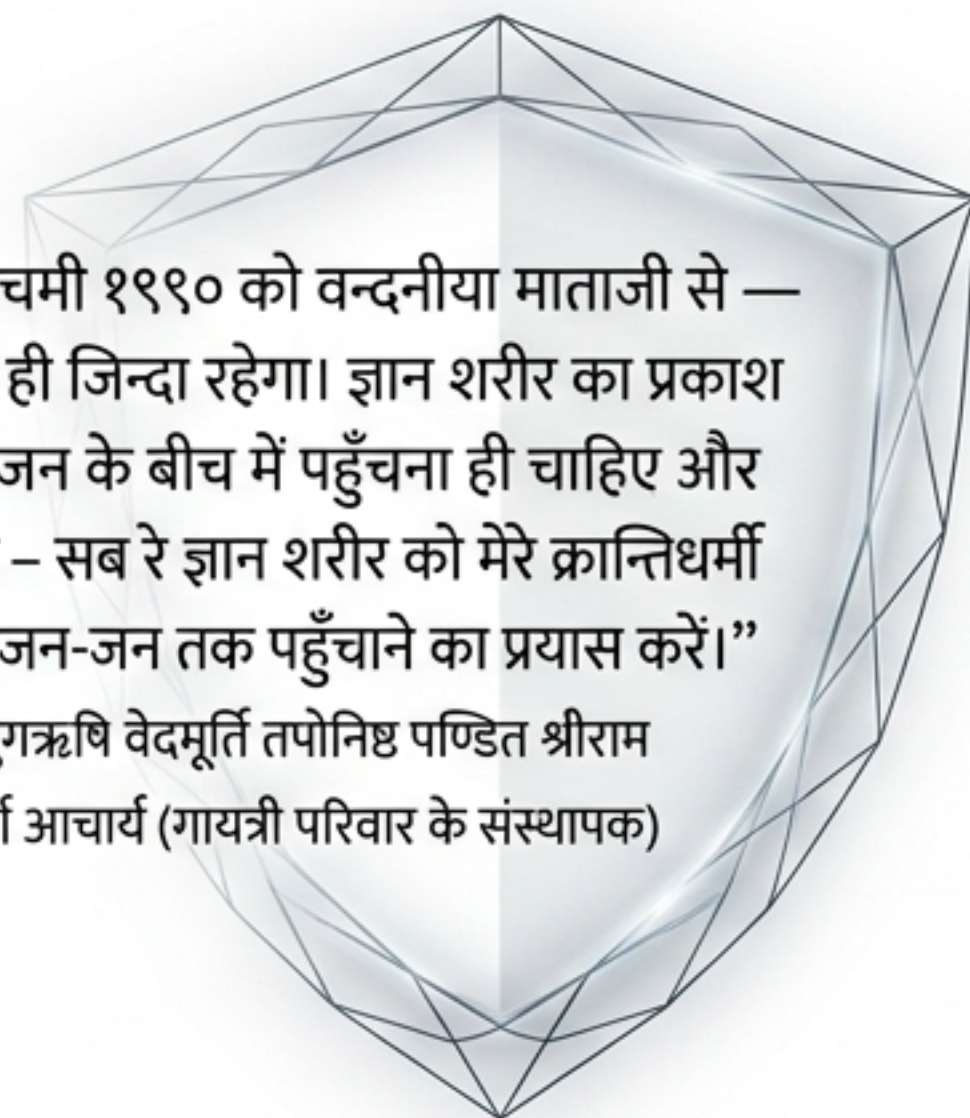


सामूहिक आत्महत्या

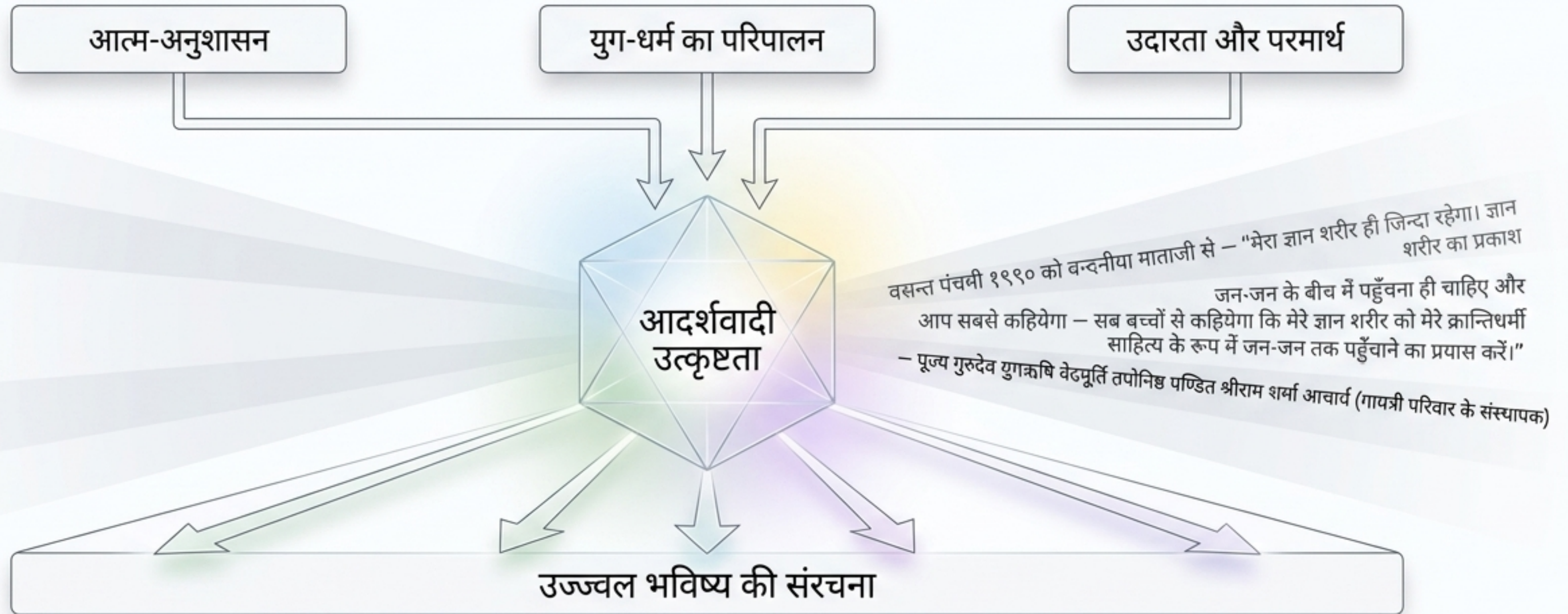


बिच्छू की रीति-नीति: जैसे बिच्छू के बच्चे माँ का पेट खाकर बाहर निकलते हैं, वैसे ही मनुष्य अपनी जीवनदात्री प्रकृति को नष्ट कर रहा है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा – सब रे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम
शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



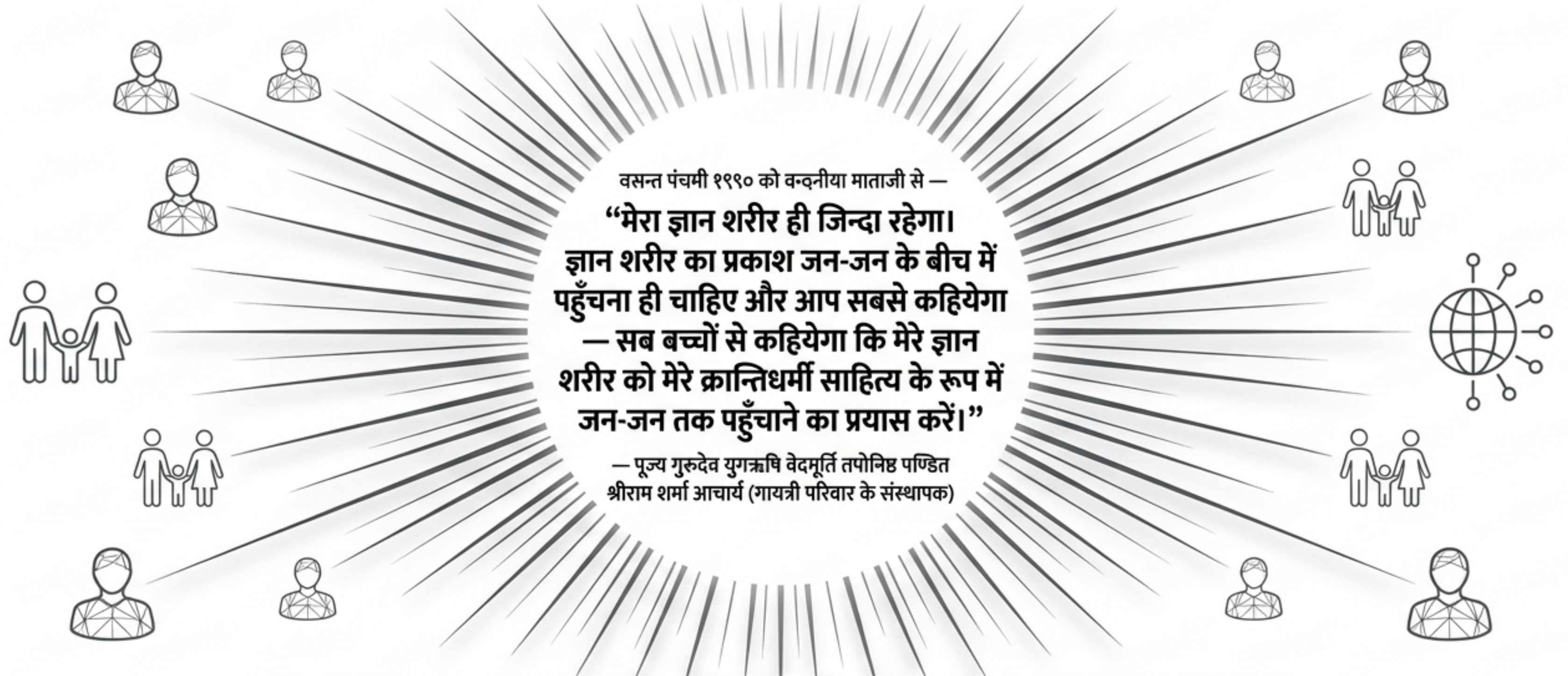
समाधान: आदर्शवादी उत्कृष्टता का वरण



वैज्ञानिक तथ्य: सिस्टम थ्योरी

जब किसी जटिल प्रणाली (जैसे वैश्विक समाज) में व्यक्तिगत इकाइयों (मनुष्य) शोषक व्यवहार (Extractive) से हटकर पोषणकारी (Regenerative) व्यवहार अपनाती हैं, तो पूरा ढांचा तुरंत स्थिर और शांत हो जाता है।

ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन तक पहुँचाएँ



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान
शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

इस क्रान्तिधर्मी विचारधारा को अपनाएं और जन-जन तक पहुंचाएं।